IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, August 2023

लोकधर्मी जनकवि श्री रामस्वरूप लाल 'मंगल' के द्वारा रचे गए गीतों का विश्लेषण एवं मूल्यांकन

सरिता श्रीवास्तव[1] and *डॉ मंजू श्रीवास्तव*[2]

शोध छात्र, नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र. भारत [1]

असिस्टेंट प्रोफेसर, नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र. भारत[2]

सार

लोक साहित्य लोक में सर्वदा से समृद्धि रहा है। इसकी भूरि भूरि प्रशंसा चत्र-यत्र ही नहीं, भोजपुरी इतिहास समाज में सभी जगह प्रतिस्थापित है। इसके बड़े-बड़े उच्च रचनाकार लेखक हुए जिनकी धवल कीर्ति देश के इतिहास पटल पर अंकित है। उनकी यश पलाका अम्बर में बहुत दिनों से और आज भी छाई हुई है। सम्भवतः उनका नाम उनका यश सर्वदा इस धरती पर विद्यमान रहेगा। उन्हीं रचनाकारों में एक नाम है लोकधर्मी कवि श्री रामस्वरूप लाल 'मंगल' का जो सुकवि ही नहीं, सच्चे सन्त, एवं लोक विधाओं के पथ-प्रदर्शक रहे।

इनकी रचनाएँ साधारण से उच्चकोटि तक हुई। उसमें इन्होंने जो भाव शब्दों का समावेश अलंकार छन्द आदि जो सजाया है, वह देश के लोक साहित्य के बड़े बड़े रचनाकारों में भी विद्यमान है। ये बहुत कम उम्र से ही रचना करना आरम्भ कर दिए थे। ये नैसर्गिक प्रतिभा के धनी थे। आरम्भ से ही ये भोजपुरी साहित्य में धार्मिक गीतों को रचकर लोक मंगल करते रहे। सम्भवतः ये हिन्दी साहित्य की सारी विधाओं के मर्मज्ञ रचनाकार थे।लोभ लाभ लालच से इन्होंने कभी भी रचना नहीं किया। मंच माइक माला की इनको कभी भी हृदय से चाहत नहीं रही।

आज भी सारा समाज प्रान्त देश इन्हें एक सन्त ही समझता है। इनके बहुत शिष्य उनके गीतों को गा-गा कर अपना जीवन यापन अच्छे ढंग से कर रहे हैं। मंगल मुन्शी जी के जीवन के विषय में क्या कहा जाए? इन्होंने अपने जीवन को एक सच्चे फकीर की तरह बिताया। अपना कागज, अपनी कलम, अपने स्याही से गीत लिखकर ये गायकों को जीवन भर देते रहे। इनके उपनाम 'मंगल' को कौन नहीं जानता? बड़े-बड़े उच्च कवियों में इनका नाम बड़े आदर से लिया जाता है। मुन्शी जी को इनकी रचनाओं से बड़ा सम्मान मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल सका। मंगल मुन्शी जी की काव्यागत शैली अद्वितीय रही। इन्होंने भोजपुरी लोकगीतों की धर्मिता को एक नया आयाम दिया है। इन्होंने भोजपुरी एवं खड़ी हिन्दी की जो सुन्दर परिपाटी विकसित की है उसकी सुगन्ध आज देश के चारों ओर बिखरी हुई है। इस शोध में सभी सूचनाएं पुस्तकालय,इन्टरनेट,समाचार एवं पत्र-पत्रिकाएं और सम्मलेन सभागार आदि से प्राप्त किया गया है |यह आंचलिक भाषा और कवि और उनकी कविता में उनके योगदान में प्रकाशित करता है |

मुख्य बिंदु : *आंचलिक, राष्ट्रभक्ति, मंगल, जीवन, गज़लआदि*

परिचय

इनको सम्मान लेना या सम्मान पाना बहुत ही कष्टदायक लगता था। इनको अमेरिकन बायोग्राफिकल इन्स्टीट्यूट इन्हें ''मैन आफ दी ईयर'' के सम्मान के लिए नामांकित किए, परन्तु मुन्शी जी वहाँ नहीं गए और सम्मान लेना स्वीकार नहीं किए। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री थी चन्द्रशेखर सिंह जी ने इन्हें अपने यहाँ दिल्ली बुलाया था। इनकी रचनाओं से प्रभावित होकर वो इनको सम्मान देना चाहते थे परन्तु मुन्शी जी सम्मान लेना पसन्द नहीं किए।

इनकी साहित्यिक साधना बाल्यावस्था से ही षुरू हो गई थी। किसी विधाओं में कोई रचना ये तत्काल कर देते थे। इनके साहित्यिक गीतों में जो शब्द समन्वय है वह कही किसी रचनाकार-रचनाओं में मिलना मुश्किल सा लगता है। मेरा उद्देश्य उनकी रचनाओं को प्रकाश में लाना है, जिससे इस लोक जगत के लोक कलाकारों भाइयों का मार्गदर्शन सरल हो जाए।

मैं सम्भवतः एक लघु स्तरीय शोध परिधि के लिए उनकी समस्त विधाओं की रचनाओं को संकलित की हूँ जो कि लोक जगत का अभिन्न अंग है। उनके शिश्यों, सम्बन्धियों परिचितों का साक्षात्कार भी ली हूँ जो उनके विषय में अच्छी एवं सत्य जानकारी दे सके, जो उनको बहुत करीब से जानते रहे। इसी के अन्तर्गत उनके सुपुत्र श्री ओम प्रकाश श्रीवास्तव जी जो ओज कवि प्रकाश मीरजापुरी एक बहुते ही अच्छे रचनाकार है, उनसे उनके विषय में जानकारी ली जो वाकई इस शोध के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण रहा।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, August 2023

जीवन परिचय

ऋषि परम्परा के अनुयायी मंगल मुन्शी जी लोक अंचल ही नहीं प्रदेश देश के सुप्रसिद्ध कवि थे। इनकी कविताएँ कोई न कोई सीख अवश्य देती हैं। वे भारतीय संस्कृति के महान चिंतक एवं सबके हृदय में निवास करने वाले सरल, मृदुभाषी, कोमल हृदय के कवि एवं उच्चकोटि के विचारक थे। भारतीय संस्कृति, एकता और देशभक्ति पर इनकी कई रचनाएँ हिन्दी साहित्य पटल पर अंकित हैं। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के माध्यम से इनकी रचनाएँ किसी न किसी आकाशवाणी से या दूरदर्शन से अवश्य सुनने को मिलती है।

प्रारम्भिक जीवन-

विन्ध्य पर्वत मालाओं से आच्छादित मीरजापुर जनपद के भूप भूरिश्रवा की पावन धरती शस्य श्यामला भुइली परगना के भाईपुर कलाँ ग्राम में परम रामभक्त पिंता अवध बिहारी के घर पूज्या माता भागीरथी के गर्भ से 6 जनवरी सन् 1925 को, मंगल मुन्शी जी का जन्म हुआ। उनका तृप्तिमान चेहरा देखकर अकस्मात सब लोग कह बैठे कि अवध बिहारी के घर राम आ गए। पुरोहित के मुख से सुनकर सभी जन उन्हें राम के स्वरूप जैसा देखकर उन्हें राम स्वरूप पुकारने लगे। एक अच्छे पुत्र के सारे गुण मुन्शी जी में विद्यमान थे। बचपन से ही लोग उन्हें अवतारी कहते रहे। कम उम्र में ही वे सामयिक, भक्ति, राष्ट्रीय कविता कुछ न कुछ लिखने लगे, मंगल जी की सभी रचनाएँ लोक मंगल के लिए समर्पित रही। मधुरभाषी एवं मिलनसार प्रवृत्ति के मंगल जी की रचनाएँ बहुत लोगों के जीवन को सुधारने में सहायक हुई।

बिना कहे, बिना सीखे समझाए अभिवादनशीलता मुन्शी जी में अपने आप समा गई थी। उनके प्रारम्भिक जीवन के व्यक्तित्व में बहुत मिठास थी। हमेशा आनन्दमय चेहरा मुन्शी जी का दिखता था। सबसे बड़ी बात मुन्शी जी से जो एक बार मिलता था, वह पूरी जिन्दगी के लिए उनका हो गया। शिक्षण काल में उनको गुरुवर जो पढ़ाते, बताते थे वह अक्षरसः याद हो जाता था। उनके बाल्यावस्था में उनमें जिसने आदर्श निहित थे, उतना आदर्श और किसी में देखने को नहीं मिलता।

रचना शक्ति का भाव हृदय में विद्यार्थी जीवन से ही आरम्भ हो गया था। ये अक्सर रामायण जहाँ होता था, बैठते, ताली बजाते थे, यह याद कर लिए थे। ''मंगल भवन अमंगल हारी।।'' इस चौपाई को बार-बार दोहराते थे। मुन्शी जी उसी चौपाई से अपना उपनाम मंगल रख लिए। मुन्शी जी को साहित्यिक प्रेरणा ईश्वरीय देन थी। वे 30 हजार भजन (भक्ति रस का गीत लिखकर) समाज को एक नई दिशा दिए। मंगल मुन्शी जी ऐसे रचनाकार थे जिनसे आप शास्त्रीय संगीत किसी प्रकार का लोकगीत, नाटक, एकांकी, कविता, छन्द कुछ भी प्राप्त कर सकते हैं। अपने सरल स्वभाव से जिस साहित्यकार ने साहित्य को अम्बर तक पहुंचाने का कार्य किया उनमें मंगल मुन्शी का नाम पहले आता है।

रामस्वरूप लाल 'मंगल' की गेय रचनाएँ-

किसी भी रचनाकार की बुद्धिमता, विलक्षणता एवम् साहित्यिक लेखन की क्षमता उसके कृत्य से पूर्ण स्पष्ट होती है। राम स्वरूप लाल मंगल जी ऐसे ही प्रतिभा के धनी थे जिनमें साहित्यिक ज्ञान का पारावार रहा। कोई विधा उनसे अछूती नहीं रहीं। सब पर उनका समान अधिकार था। उनकी हर विधाओं में अपनी एक अलग सोच है। कविता राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत उन्होंने कई हजार कविता लिखी जो निम्नलिखित है।

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, लगी चौतरफ आग सिपाही जाग रे जाग सिपाही

जन श्रुति है कि मंगल जो बोलते है। वह वाणी ही कविता थी। उन्होंने कई भाषाओं में रचना किया। हिन्दी, उर्दू, अरबी, भोजपुरी सबमें भिन्न-भिन्न विधाओं में रचना कर के लोक मंगल की भावना स्थापित किए। यह गीत राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत है। कवि ने कहा है कि चारों तरफ आग लगी है। ये भारत के पहरुवे अभी तुम सोए हो। जागो! निद्रा को त्यागो। बैरी सीमा पर पहुँचने वाला है। उठो तुम्हें तुम्हारी धरती माँ बुला रही है।

भारत की सुधरता ये विधाता की देन है
दृढ़ता मेरी नगराज निकटता की देन है।
दुनिया की देन है न तो जनता की देन है।
आजादी उस बापू की तपस्या की देन है।

मंगल मुन्शी जी राष्ट्रीय कविताओं में लगता है कि अपनी लेखनी से आग उगलवा दिया है। राष्ट्रीय कविताओ में कजरी, खड़ा ह सीमा पै जवान, सीना तान के, ले हथेली जान के।।

हमारे देश के प्रहरी सीमा पर खड़े हैं कि कोई भी अत्याचारी इस सीमा पर डट कर अत्याचार न करे। वह अपने संकल्प और विष्वास के साथ सर पर कफन बाँधे, हाथ पर प्राण लेकर पहरु पहरे पर खड़े है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, August 2023

जागो जागो जागो
सीमा के ऊपर जवान जागो
खेतों में हल ले किसान जागो
जगा रही जलनिधि की लहरे
जगा रहा हिमवान जागो
जवानों जागो! किसानों जागो!

उनका आह्वाहन गीत राष्ट्रगीत बेमिशाल होता था। अपने भारत की मर्यादा को बचाने के लिए बीर बहादुर सिपाही को कवि ने पुकारा है कि नींद को त्याग कर सीमा सुरक्षा के लिए बढ़ो।

भक्ति परक गीत

सरकार जो बाँकी चितवन का एक बार इशारा हो जाए।
तो मुझ गरीब के जीने का, कुछ रोज सहारा जो जाए।।
अरमान भरा यह दिल लेकर दर-दर की ठोकर खा बैठें।
आशवो के झूठे सपनों में अपना सर्वस्व लुटा बैठे
कोई जगह कहीं ऐसी न मिली, जिस जगह गुजारा हो जाए।।

मंगल मुन्शी जी ने भक्ति रस की कविताओं से घर, गाँव, जिला, प्रदेश, देश में अपने नाम को रोशन किया है। भक्त अन्त में दुनिया की सारी ठोकर खाकर प्रभु के पास जाकर विनय कर रहा है कि ये प्रभु अब मेरा कोई नहीं है। आषवों में भटक-भटक कर मैं कुछ भी नहीं हासिल कर सका।

हम तेरे विरह में मन मोहन, रोते भी रहे, हँसते भी रहे
पुरजन परिजन ब्रज के कनकन, रोते भी रहे, हँसते भी रहे
एक ओर वियोगी बन कर के, आनन्द विरह का लूट रहे
एक ओर है रग-रग में तड़पन रोते भी रहे, हँसते भी रहे
मंगलमय जो दीनता दिए वो याद तुम्हारी रहती है
पर दरिद्रता दुख सबसे गहन, रोते भी रहे, हँसते भी रहे।

ब्रज की गोपिकाएँ भगवान कृष्ण के विरह में व्याकुल हैं। कवि मंगल मुन्शी जी ने उनके दुखों का वर्ष उन्हीं के मुख से करवाया है।

सवैया

रानी जे बा महरानी जे बा, कबौं ओकर पूत भिखारी न होई।
ज्योति स्वरूपा कै आस जे के, ओकरे अंगने अँधियारी न होई।।
मंगल के उर में बिसवास कि देबी के दास कै हारी न होई।
माई कै बा ममता जहवाँ, उहवाँ कोई दीन दुखारी न होई।।

भक्त को कितना विष्वास है कि शेरावाली माँ के रहते कुछ भी अमंगल होना असम्भव है जिसकी माँ महारानी है उसका पुत्र भिखारी हो ऐसा हो ही नहीं सकता। माँ की ममता की छाया हो। वहाँ कोई दीन हो दुखारी हो यह असम्भव है।

साहित्यिक छन्द

कंटक सी कसकै कुसुमावलि, कोकिल कूँ के हूक उठावै
धानी धरा धधकावै हिया, पपिया पपिहा छतिया सुलभावै
सालति बा सरसो सरसो, बउराई रसाल जिया बउरावै
मंगलमय से ईहै बिनती, घर कन्त न हो ता बसन्त न आवै।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, August 2023

देशभक्ति

आयल हौ सीमा से सनेश, बतावा पिया जइबा कि ना
तोहके बोलावता नगेश, बतावा पिया जइबा कि ना।।
लूट ली हैं पपिया जो देशवा क पनिया
कब काम देही हमहन कै जवनिया
कटी जो न जननी कलेश, बतावा पिया जइबा कि ना।।
जीव अइबा है कि खेल मंगल मनाइब
नाहीं रउरे संगवा परनवां पठाइब
सबसे पियारा आपन देश बतावा पिया जइबा कि ना।।

मंगल जी को राष्ट्रीय कवि का दर्जा मिलना चाहिए था परन्तु ऐसा नहीं हुआ। उक्त लोक गीत में पति सोया है। पत्नी कह रही है कि ये प्राणेष सीमा से खबर आई है कि आप सोए हो। उठो! बताओ कि जाना है न। सीमा का प्रहरी हिमालय तुम्हें बुला रहा है। आप ही सोचो कि यदि देश की इज्जत ये पापी ओकर लूट लेंगे तो आखिर हम लोगों कि जवानी किस काम की। माँ का क्लेश न कटा तो दुनिया क्या कहेगी? आप रणभूमि में जाएँ यदि जीत कर आयेंगे तो साथ-साथ हँसी खेल होगा, आनंद रहेगा। यदि वीरगति मिलेगी तो आपके प्राण के ही साथ हमारा प्राण भी चल जाएगा। जहाँ आपका प्राण रहेगा वहाँ हमारा प्राण जाएगा कि क्योंकि प्राण से प्यारा यह अपना भारत देश है।

लचारी

पारम्परिक धुनों पर भी श्री रामस्वरूप लाल मंगल मुन्शी जी ने विजय श्री हासिल किया है।

चाही न सुड़ियाँ चुनरिया बलम
तरुवरिया मंगा दा हो
मोके सुहाले न मेंहदी क लाली
कोमल कलाई ई मांगै ले भुजाली
लाख लेसा गोसिया कठोर बारा दियना
पै भोर नाहीं होय
बिसा सुरुजू अंगनवा अंजोर नाहीं होय
बिना फूल लागैले उदास फुलवरिया
बगिया बेहून लागै बिनु कोइलरिया
तरइन के उगले अन्हरिया डगरिया कै थोर नाहीं होय
कारी रात कबौं चन्दा बिनु गोर नाहीं होय
उपजैला सोनवां कुदारिया की नोक से
बनै इतिहास तरुवरिया की नोक से
मंगल कलमिया बिनु हिया सहजोर नाही होय
अउरो जेकरे करेजवा के कोर नाही होय

कवि मंगल जी लोक भाषा, और खड़ी बोली और हिंदी की रचनाएँ एक दो नहीं बल्कि बहुत रचनाएँ करके साहित्य जगत में नाम हासिल किया है। वो इस रचना में लिखे हैं कि बिना सूर्य के कभी सुबह सम्भव नहीं है। यह फुलवारी उदास लगती है जिसमे फूल न हो। वह बाग व्यर्थ है, जिसमें कोकिल न कूंकती हो। छोटे-छोटे तारों से रात्रि का अन्धकार दूर नहीं होता जब तक कि चाँद नहीं उगता। इसमें कवि की भावना देश प्रेम की ओर भी अग्रसारित करती है।

राष्ट्रीय गीत

देशवा कै कीमती रतनवां दू ललनवा हो
एक तै जवनवाँ एक किसनवां दू ललनवा हो
चाहे हो बसन्त कै बहार मनभावनी
रस बरसावे चाहै श्याम छटा सावनी

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, August 2023

ताकै न लउटि के भवनवां दू ललनवा हो
एक सरहदवा पै खूनवा बहावै लै
खेतवा में दूसरा पसीना ढरकावै लै
होलै हँस हँस बलिदनवां दू ललनवा हो
एक तै जवनवाँ एक किसनवां दू ललनवा हो

वाकई रामस्वरूप लाल मंगल जी जवान और किसान के प्रति बहुत कविताएँ लिखे है। ये ही दो रत्न है। देश भारत के ये दो रत्न जवान और किसान। कवि कहता है कि चाहे वसन्त की बहार हो, या सावन की फुहार हो परन्तु ये कठिन तपस्या करते रहते हैं। एक सीमा पर एक सीवान पर इन्हें कभी भी घर की याद नहीं आती कि लौट चलें। एक सीमा पर खून बहाता है और दूसरा मेड़ पर पसीना। दोनों हंस हंस अपने धर्म-कर्म का निर्वहन करते रहते हैं। दोनों का कार्य देश के लिए महत्वपूर्ण है।

गीत

बढ़ती आबादी तूफान बनकर
देश के सामने अब खड़ी हौ
देशवासी करा हल एहू के
ई परीक्षा कै आइल घड़ी हौ
जब भइल देश के मांग जइसन
हर जरूरत पै तू काम कइला
शीश सीमा पै हंस-हंस कटउला
नस कटावै में का गड़बड़ी हौ

देश की सारी योजनाओं के प्रति मुन्शी जी ने गीत लिखकर अपने शिष्यों द्वारा आकाशवाणी एवं दूरदर्शनों पर प्रस्तुत कराकर सरकारी कार्यक्रमों को सफल बनाया है। परिवार नियोजन पर उन्होंने लेखनी उठाई कि आबादी तूफान जैसी बढ़ती जा रही है जो देश के सामने एक बहुत बड़ी विकट समस्या बन कर खड़ी है। ये देश वासियों जब देश की समस्या को सुलझाने में हाथ बटाते हो तो यह कौन सी भारी समस्या है। जब-जब देश ने तुम्हें पुकारा है तुम बड़ी तल्लीनता से देश सेवा में लगे हो। यहाँ तक कि शीश भी हँस-हँस कर सीमा पर कटा दिए हो तो मामूली नस परिवार नियोजन से तुम्हें क्या दिक्कत है। बढ़ो! सरकार की इन समस्याओं को हल करो। यह सबके हित में है। मंगल मुन्शी जी ने ऐसा कोई बिन्दु नहीं छोड़ा है जिस पर इन्होंने रचना नहीं की है।

गजल

तेरी नज़रों में सबकुछ है लेकिन,
प्यार सच्चा किसी का नहीं है।
अहले दिल जिसपे दिल को लुटाते,
तर्ज ओ-ओ तरीका नहीं है।
जिष्म नाजुक गुलाबी अधर है
दस्तो पां मखमली है भले ही
कौन पिघलेगा हम बेकसों पै
जब मुलायम कलेजा नही हैं।

मंगल जी हिन्दी के अलावा उर्दू, फारसी, अरबी की रचनाएँ भी किए हैं। उनकी प्रतिमा का आकलन उर्दू वाले उर्दू में, हिन्दी साहित्य वाले हिन्दी में और भोजपुरी वाले भोजपुरी में करते है। लगता है इनको हिन्दी उर्दू में बराबर विजय श्री हासिल थी। सम्भवतः वो लाख डेढ़ लाख गीत लिखे थे उनके गायकों के पास किसी के यहाँ 10 हजार किसी के यहाँ 5 हजार ऐसे-ऐसे गीत है। जो अन्यत्र मिलना मुश्किल है। हर पारम्परिक धुन पर राष्ट्रीय गीत, गजल मुक्तक छन्द सब पर इनका समान अधिकार था। शास्त्रीय संगीत में भी इनकी रचनाएँ अनगिनत है। यहाँ तक कि इनके गीत पंडित छन्नूलाल मिश्र ने भारत में ही नहीं अन्यत्र देशों में जाकर ''खेलैं मसाने में होरी दिगम्बर-खेलै मसाने में होरी'' सुनाकर अपने और इनके नाम को स्वर्ण अक्षरों में लिखवा दिया है।

महान प्रतिभा के धनी, बजरंग बली के उपासक मुन्शी मंगल लाल ने षास्त्रीय संगीत में भी अपनी प्रतिभा को प्रतिस्थापित किया है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, August 2023

हम तै जोगिया बदले बनली जोगिनिया

मोसे करा न फगुनवां, तू छेड़खनिया
भावै भसम न रूचै रंग रोरी
शिव बिनु अस हो गई गति मोरी
जइसे कि फनिया बिना मनिया
मोसे करा न फगुनवा तू छेड़ खनिया

जत की इस होली को मुन्शी जी ने षास्त्रीय संगीत में पिरोया है। किसी भी विषय पर किसी समय रचना लिखकर चाहे वो किसी भी विधा की हो किसी को भी दे देना यह मुन्शी जी की अनुपम कला थी।

साहित्यिक शब्दों का सामंजस्य मुन्शी जी की रचनाओं में सर्वत्र रहता था। इन्होंने कविता को अपनी बिटिया समझा इसीलिए कभी किसी को भी पैसा लेकर उन्होंने गीत, कविता, गज़ल कुछ भी नहीं दिया। मुन्शी जी बचपन से ही बड़े दयालु और कोमल स्वभाव के थे।

मुन्शी जी ने कभी भी अपने द्वार पर गुरु पूर्णिमा को अपने द्वार पर अपने पूजा का कार्यक्रम नही कराया। कोई गायक या कलाकार यदि द्वार पर गीत लेने आया तो मुन्शी जी का उसके प्रति अतिथि का स्वभाव था।

महत्व

एक ही व्यक्ति में लेखन के सारे गुण विद्यमान थे। चाहे आप सोहर लाचारी पचरा पारम्परिक गीत, गज़ल लोकगीत कविता, छन्द मुक्त राष्ट्रीय गीत सबमें एक नई ज्योति पैदा करना यह मुन्शी जी की महानता रहीं। उनकी रचनाओं में भाव षब्द अलंकार रस छन्द सर्वत्र मिलता है। मुन्शी जी के व्यक्तित्व की महानता उनकी सबसे बड़ी महानता है। काषी के सुविख्यात उपषास्त्रीय संजीव के गायक कलाकार वाराणसी ने ‘‘खेलै मसाने में होरी दिगम्बर‘‘ यह गीत देश विदेश में गाकर मुन्शी जी की साहित्यिक खुशबू को सारी दुनिया में बिखेर दिए हैं। मुन्शी जी अपने में सद्गुणों को सिमटे साहित्यिक सेवा जीवन भर एक आदर्श साहित्यकार के रूप में करते रहें। अध्यापक रहते हुए भी गरीब बच्चों को कापी किताब कलम खाना देते रहते थे। मुन्शी जी ने अभावों में ही जीवन जिया परन्तु किसी को आभास नहीं होने देना चाहते थे। सरस, सुन्दर स्वभाव, सरल, श्रीराम के सरीखे श्री रामस्वरूप लाल ‘मंगल’ ने पूरी दुनिया में साहित्य की एक ऐसी अलख जगा दी है जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

सम्भवतः यह कहा जा सकता है कि जब तक धरती रहेगी जब तक आसमाँ रहेगा तब तक मंगल की कविता, सर्वत्र समाज का मंगल करती रहेगी। इनका नाम क्षेत्र ही नहीं बहुत दूर तक बना रहेगा। फकीरी में जीवन को बिताने वाले कवि मंगल मुन्शी सदैव सबसे मस्तिष्क में छाए रहंगे।

गोलवा बरसे चाहे गोलिया, पनिया बरसै या पथरवा,
पहरू पहरोपै खड़ा रस कै करत पसार जगत में जब आवे सावनवा
तबो न ताकै फेक के गर्दन, घर की ओर जवनवा
मटिया मिल्ली हो मेंहदिया
बहि-बहि जाला कुल कजरवा पहरू पहरा पै खड़ा

इस गीत को गाकर मंगल मुन्शी के शिष्य श्री लाल बिहारी मिश्र ने सारी दुनिया में गाकर ख्याति अर्जित की है। वीरत्व और श्रृंगार की एक सुन्दर छटा इस गीत में देखने को मिलती है।

लोककवि मंगल मुन्शी जी के गीतों में भावों, षब्दों रस अलंकार समास की विशेषता मुख्य है। मुन्शी जी के गीत हजारों से भी अधिक के रोजी रोटी का माध्यम बना हुआ है। मुन्शी जी कभी भी अपने को कुछ नहीं प्रभु से माँगते थे। समाज के लिए ही माँगना मरना और जीना रहा। एक छन्द में –

नहि चाहीला तख्त वो ताज मिलै, नहिं चाहीला सम्पत्ति से तस दा।
प्रभु माँगव मोर सुभावन ही, हमरी करनी तस हो तस दा।।
दीहल चाहा जो नाथ हमें, अपने पद पंकज कै रस दा।
सुख दा त हृदय में निवासकरा दुःख दा तै तू झेलै क साहस दा।।

लगता है कि मुन्शी जी को अपने करनी पर विश्वास था तभी न वो कहे कि हमरी करनी जस हो तस दा।

साहित्य के प्रति मुन्शी जी के हृदय में बहुत लगाव था। बहुत बड़े-बड़े रचनाकारों की पुस्तकों का अध्ययन करना इनकी प्रतिदिन की दिनचर्या रही। किसी कवि में साहित्य के अलावा एक आध्यात्म का रस होना यह एक बहुत महत्वपूर्ण विषय है। मुन्शी मंगल लाल जी साधुक्कड़ी एवं मधुकरी दर्शन में विश्वास

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, August 2023

रखने वाले कवि थे। जिस समय पारम्परिक धुनों की चर्चा यत्र तत्र प्रारम्भ थी, उस समय इन्होंने भोजपुरी साहित्य में पारम्परिक धुनों द्वारा समाज को नई दिशा दिया था। मुन्शी जी की सरलता और सज्जनता के विषय में चाहे जो भी कहा जाए, वह कम ही समझा जाएगा।

उपशास्त्रीय गीतों की भी रचना मुन्शी जी ने बहुत किया है जो आज भी गायकों द्वारा यत्र तत्र गाया जाता है। मुन्शी जी कभी अपनी रचना को अपने घर नहीं रक्खे। कोई भी रचना लिखकर ओ तुरन्त किसी को दे देते थे या बांट देते थे। यही कारण है उनकी सारी रचनाएँ उनके शिष्यों द्वारा उपलब्ध है।

मुन्शी जी ने अपनी रचनाओं से धनोपार्जन कभी नहीं किया। बड़े संकोची स्वभाव के होने के कारण वे कहीं सम्मान हेतु जाना भी कभी पसन्द नहीं किए। ये सब उनके जीवन की महत्वपूर्ण बातें हैं। साहित्य साधना में उनकी अटूट साधना थी। मुन्शी जी के मन में ये अवधारणा रही कि मेरी रचनाएँ जो भी हो वह समाज के लिख मंगलकारी हो। अक्सर वो कहा करते थे कि जिससे समाज का मंगल हो, वह कार्य किया जाए।

उपसंहार

यह लघु शोध लोक कवि मंगल मुन्शी पर 5 खण्डों में विभाजित है। पहला प्रस्तावना, दूसरा जीवन परिचय, तीसरा गेय रचनाएँ, चौथा उनके गीतों का महत्व एवं पांचवां उपसंहार।

मुन्शी जी की रचनाएँ, अधिकांशतः समाज सुधारक एवम् राष्ट्रीय और भक्ति मय थी। आज भी उनके गीत हर घर में महिलाओं द्वारा मन्दिरों में भक्तों द्वारा मंचों पर गायकों द्वारा गाए जाते हैं जिससे लोक मंगल होता रहा है।

मंगल जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने बड़ी सादगी से अपने जीवन को जीया। सबके प्रति उदारता रखने वाले मुन्शी जी का नाम यशोगान, विष्व पटल पर सदैव अंकित रहेगा। कोई भी ऐसी विधा नहीं है जिस पर मुन्शी ने उस पर अपनी लेखनी चलाकार उसे एक नए साँचे में ढालकर समाज के सामने न रक्खें हों।

उनकी कविताओं में आदर्शवादिता, समाज को सन्देश एवं साहित्यिक हर गुण विद्यमान है यह हमारा हृदय लुट चुका है।

यह हमारा हृदय लुट चुका है
श्याम तेरी छटा माधुरी पै।
जीत पै सुलट पै मुकुट पै
मूर्ति सुषमामई सांवरी पै।।
चित्ता कर्षक नहीं कौन अवयव
नेत्र प्रत्येक वस्तु पर हैं उलझते।
बिधु बदन पै नयन पै चरन पै
कंज कर पै ललित बाँसुरी पै।।

इस रचना में भगवान श्री कृष्ण की चर्चा की गई है। शब्दों के लालित्य पन से समूची कविता सबको मन्त्र मुग्ध कर देती है।

लोक धर्मी कवि राम स्वरूप लाल मंगल पर लघु शोध लिखने का आशय यही है कि लोग उनकी साहित्यिक मार्मिकता को पहचानें, उनके भजन गीत से अपने जीवन को मंगल मय करें।

मुन्शी जी की कविता कहीं भी किसी बहुत बड़े अच्छे रचनाकार की श्रेणी में आती है। राष्ट्रीय कविताओं ने तो कभी-कभी सोचने को मजबूर कर दिया है।

राष्ट्रध्वज फहर फहर
श्रृंग पर नगेश के
वृक्ष पर स्वदेश के
तूं फहर समीप जा
निशीश के दिनेश के
गेह-गेह के गली-गली शहर-शहर
राष्ट्रध्वज फहर फहर
कुटिल पर कुरीति पर
अघ असुर अनीति पर
स्वार्थ द्वेष लोभ लाभ

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, August 2023

भेदभाव भीवि पर

उग्र वर्गवाद पर बज्र बन घहर घहर

राष्ट्र ध्वज फहर फहर

मुन्शी जी को आज भी सारा क्षेत्र समाज अपने में राष्ट्रीय कवि ही मानता की है। देश के प्रति उनकी बहुत रचनाएँ आज भी चारों तरफ फैली हुई है। विद्यालय कालेज आकाशवाणी, दूरदर्शन पर उनके गीत प्रायः गाए जाते हैं जो समाज के लिए मंगलकारी हैं। उन्हें अपने धर्म और अपने कर्म पर अटूट विश्वास था। बजरंग बली के महान उपासक घर से 5 किलोमीटर पर रामसागर धाम जो कि पहाड़ पर जो कि बाबा खड़ेष्वरी की तपोभूमि है वहाँ जाकर प्रत्येक शनिवार को सुन्दरकाण्ड करवाना और खुद रामायण पाठ करना। ये मुन्शी जी का जीवन भर रहा।

उस पहाड़ पर अपने हाँथ से कई छोटे-छोटे पेड़ लगाना। आज मुन्शी जी नहीं हैं परन्तु वह सब पेड़ बड़े होकर विद्यमान है। मुन्शी जी के शिष्यों द्वारा सुपरिचितों द्वारा आज भी वहाँ सुन्दर काण्ड हर शनिवार को सायंकाल होता है। सुदूर ग्रामीणांचल में यह एक महत्वपूर्ण स्थान है।

मुन्शी जी जब तक इस धरती पर रहे लोगों का सम्मान सादर पाते रहें। उनके चले जाने के बाद भी उनका यशोगान सबके मुख से किया जाता है।

विश्वास है कि जब तक यह वसुन्धरा रहेगी जब तक ये आसमान रहेगा तब तक श्री रामस्वरूपलाल मंगल मुन्शी का सम्मान रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. Zee Ganga (2016) zeegangaofficial
2. https://www.facebook.com/KGMMirzapur/videos/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%B50
3. https://www.bhaskar.com/local/chhattisgarh/bastar/jagdalpur/news/tricolor-march-was-taken-out-said-hoist-the-national-flag-in-every-house-130185248.html
4. https://readerblogs.navbharattimes.indiatimes.com/navchetana